हरिभूमि
epaper.haribhoomi.com
Raipur Raipur Bhoomi - 22 Feb 2025 - Page 4

आईआईएम के जश्न ए नज्म मुशायरे में देश के दिग्गज शायरों ने की शिरकत

उलझे-उलझे हैं दिल सुलझाओ, सिद्ध सरल गीत हो जाएंगे...

कार्नर न्यूज

भारतीय प्रबंध संस्थान के मिराई उत्सव के दौरान शुक्रवार शाम को जश्न ए नज्म मुशायरे में देशभर से नामचीन शायरों और कवियों ने शिरकत की। इस मुशायरे की टैगलाइन 'एक शाम खुद से रूबरू होने के नाम' थी। जैसे ही ऑडिटोरियम में वसीम बरेलवी, अजहर इकबाल, जुबैर अली ताबिश, अमन अक्षर, कुशल दौनेरिया, मनु वैशाली और राहुल कुमार राजपूत ने अपनी कुर्सियों से उठकर स्वागत किया तो एक जबरदस्त माहौल बन गया।

रायपुर। अजहर इकबाल ने मंच का शानदार शायराना और मजाकिया अंदाज में संचालन किया। आगाज-ए-मुशायरा करते हुए युवा शायर अली रुमानी ने 'तुम आ रहे हो ना' नज्म पढ़कर महफिल में समां बांध दिया। अली की नज्म 'हुए कहते हैं हवा इत्र घोलकर खुशबू कर दिया' श्रोताओं की वाहवाही बटोरने में सफल रही।

मुशायरे में शायरों ने बांधा समां, प्रेम की नज्म पर छलके आंसू

शायरी ने किया भावुक

कवि रोहित राजपूत ने अपनी प्रस्तुति से महफिल में हंसी का तड़का लगाया। उन्होंने कहा, 'इस तरह से सियासत का हल कर दिया, मैंने उसके हाथ को कमल कर दिया,' इस पर श्रोताओं ने जोरदार ठहाका लगाया। इसके बाद रोहित ने मार्मिक पंक्तियां पढ़ी और कहा, 'मैं जब घर से निकलता हूं, मेरी मां मुस्कुराती, वो हंसकर अपने आंसू छिपाती है,' जो सभी को भावुक कर गया।

श्रोताओं के दिल तक पहुंची बात

इसके अलावा मनु वैशाली ने 'उलझे उलझे हैं दिल सुलझाओ सिद्ध सरल गीत हो जाएंगे, अंकगणित के प्रश्नों जैसे हैं हल हो जाएंगे' गीत गाया। इस पर दर्शक दीर्घा में बैठे लोग खुशी से झूम उठे। उसके बाद मशहूर शायर जुबैर अली ताबिश ने आते ही समां बांधकर रख दिया। मोबाइल शेर पढ़ते हुए ताबिश कहते हैं "हैलो सुनते ही कट कर दिया उसने मेरा फोन, खुदा का शुक्र आवाज तो पहचानता है" इन शेरों को पढ़ने के बाद लोगों ने तालियों से जुबैर का स्वागत किया।

मेरी बेटी भी हाथों से निकल जाए

कुशल दौनेरिया जैसे ही 'मेरे होठों पर सिगरेट नहीं होती थी, उसकी मांग में सिंदूर नहीं होता था,' शेर पढ़ते हैं, श्रोता तालियों की गड़गड़ाहट से ऑडिटोरियम को गुंजायमान कर देते हैं। मुशायरे में कुशल ने 'यहां तुम रुतबा देखना हमारा, हमारी रेत दरिया हमारा, किसी को कल पिताजी कह रहे थे, मोहब्बत लड़का खा गई हमारा' सुनाते हुए श्रोताओं की वाहवाही लूटी। इसके बाद कुशल ने ' पढ़ाने का अगर मतलब है हाथों से निकल जाना, खुदाया फिर मेरी बेटी भी हाथों से निकल जाए' शेर पढ़ा, जिसे सुनकर दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए और तालियों की गड़गड़ाहट से उनका स्वागत किया।

Hari Bhoomi, 22-02-2025, P.N 04 (Raipur Bhoomi)